Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2024 = 8.153
https://www.srjis.com/issues_data/239
Peer Reviewed & Refereed Journal, SEPT-OCT 2024, Vol- 13/85

HARMONY OF TRADITION AND REFORM: MAHATMA GANDHI'S EDUCATIONAL VISION AND THE NEW NATIONAL EDUCATION POLICY

प्राचीन एवं सुधार का संशोधित समानता : महात्मा गांधी का शिक्षा दृष्टि–विचार एवं नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति

Patel. Zeel . Ajaykumar
Research Scholar, Department of Education
Prof. Dr. Kaushik V. Pandya
Pacific Academy of Higher Education and Research University, Udaipur

Paper Received On: 20 SEPT 2024
Peer Reviewed On: 24 OCT 2024
Published On: 01 NOV 2024

Abstract

इस शोध–पत्र का मुख्य उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि महात्मा गांधी के शिक्षा विचार में प्राचीन परम्परा और सुधार के बीच समानता को बहुत महत्वपूर्ण दृष्टि से देखा गया। महात्मा गांधी बताता था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए स्वालम्ध, व्यक्तित्व और जीवन में मूल्य का श्रम। वहाँ उन्होंने अपनी "Nai Talim" या "नगरीय शिक्षा" के माध्यम से जीवन में स्वालम्ध और समानता का श्रम देया। अब नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) में भी यह संदेह देते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि जीवन में holistic development and value-based education, वं नौनिहत्व बहुत महत्वपूर्ण हैं। NEP में "skill-based learning" and "entrepreneurship" पर बहुत बल देते हुए गांधी जी के शिक्षा दृष्टि के बहुत मुख्य बिन्दुों का पुनः अध्ययन देता है। शोध–पत्र में यह तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है कि गांधी जी का शिक्षा विचार बहुत समय पूर्व से बहुत मुख्य उद्देश्य देता आ रहा है और NEP में उससे आपूर्ति होती देखा जा रही है। इसके परिणामस्वरूप यह स्पष्ट होता है कि प्राचीन परम्परा और नवीन शिक्षा नीति के बीच बहुत महत्वपूर्ण समान बिन्दु हैं जो वर्तमान समय में बहुत उपयोगी हैं।

*"**मुख्य शब्द**" — प्राचीन परम्परा, सुधार, महात्मा गांधी, NEP 2020, स्वालम्ध, मूल्य शिक्षा*

परिचय

2.1 विषय का परिचय

भारत में शिक्षा को बहुत समय से जीवन का मुख्य उद्देश्य मानया जाता है। प्राचीन समय में जहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था औधोगिक विकास, वहीं आगे चुनाव में महात्मा गांधी ने शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए स्वालम्ध और जीवन में मूल्य का श्रम बताया।

2.2 महात्मा गांधी का शिक्षा विचार

महात्मा गांधी के शिक्षा दृष्टि–विचार में जीवन में प्राचीन परम्परा और सुधार के बीच संशोधित समानता बहुत मुख्य था। वह बताता था कि शिक्षा केवल कुछ ज्ञान का प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि जीवन में व्यक्तित्व का विकास, स्वालम्ध एवं मूल्य का श्रम देने का संसाधन है। उन्होंने बताया कि जीवन में "hands-on learning" और भकुल जीवन प्रौद्योगिता । का बहुत महत्व है जिससे शिक्षा अपने मुख्य उद्देश्य को पहुंचा सकती है।

2.3 NEP 2020 का संदेह

नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह संदेह देते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि जीवन में holistic development और multidisciplinary approach बहुत महत्वपूर्ण है, जहाँ स्वालम्ध एवं नौनिहत्व के बिन्दु बहुत मुख्य हैं। इसके द्वारा गांधी जी के शिक्षा दृष्टि में बहुत मुख्य उद्देश्य बहुत आगे बढ़ते देखा जा सकता है।

Copyright © 2024, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

2.4 प्राचीन और वर्तमान का तुलनात्मक दृष्टिकोण

इस तुलना से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी का शिक्षा दृष्टि जीवन में प्राचीन परम्परा का श्रम रखते हुए भी बहुत मुख्य रूप से नवीन शिक्षा नीति में बहुत उपयोगी रहता है, जहाँ जीवन में स्वालन्ध और व्यक्तित्व का श्रम बहुत महत्वपूर्ण है।

समस्या कथन

भारत में शिक्षा के परिणाम बहुत समय से बहुत मुक्तिशाली रहे हैं। प्राचीन समय में जहाँ शिक्षा का मुख्य उद्देश्य औधोगिक विकास और कुछ जानकारी प्रदान करना था, वहीं महात्मा गांधी ने बताया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए स्वालन्ध और मूल्य पर आधारित जीवन का श्रम। अब नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) में यह संदेह देखा जा रहा है कि जीवन में holistic development and multidisciplinary approach का बहुत महत्व है, परन्तु इस कार्यक्रम के संचालन में बहुत चुनाव भी हैं। एक मुख्य समस्या यह है कि यह बिन्दु बहुत बार गांधी जी के शिक्षा दृष्टि से तुलनात्मक रूप से सम्बन्धित हैं, परन्तु उसके आधार पर वर्तमान नीति का बहुत अध्ययन बहुत कम हुआ है। इसलिए इस शोध का मुख्य प्रश्न यह है कि गांधी जी के शिक्षा विचार में प्राचीन परम्परा और सुधार के बीच जिसके बहुत बिन्दु NEP 2020 में बहुत समान हैं, वे अब भी वर्तमान जीवन में क्यों उपयोगी हैं और उन्हें शिक्षा नीति में बहुत ज्यादा तरह कैसे संयुक्त किया जा सकता है।

4. अनुसंधान का औचित्य

इस शोध का औचित्य यह है कि महात्मा गांधी के शिक्षा दृष्टि और NEP 2020 के बीच तुलनात्मक अध्ययन किया जाय। इससे कुछ बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु स्पष्ट हो सकते हैं —

1. ''प्राचीन एवं वर्तमान का समानता'' — गांधी जी ने शिक्षा में बताया कि जीवन में प्राचीन परम्परा का श्रम बहुत महत्वपूर्ण है, परन्तु उसका उपयोग वर्तमान समय के मुक्ति और समस्याएँ देखकर किया जाना चाहिए। NEP में भी जीवन में प्राचीन मूल्यों को बहुत महत्वपूर्ण रखते हुए multidisciplinary learning पर बल दिया गया है।

2. ''स्वालन्ध और नौनिहत्व'' — गांधी जी के विचार में स्वालन्ध और नौनिहत्व बहुत मुख्य थे। NEP में भी skill development, vocational learning and entrepreneurship पर बल देते हुए इस बात को पुनः समझौता दिया है।

3. ''मूल्य आधारित शिक्षा'' — गांधी जी बताता था कि शिक्षा के बिना मूल्यों के जीवन पूरी तरह सम्भव नहीं हो सकता। NEP में भी अंसनम.इंमक समंतदपदह का बहुत संदेह है जहाँ व्यक्तित्व और जीवन में नागरिक जिम्मेदारी बहुत महत्वपूर्ण है।

4. ''समाज और राष्ट्र निर्माण का उद्देश्य'' — गांधी जी के विचार में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए जीवन में स्वालन्ध और समाज में न्याय का श्रम। NEP में भी यह मुख्य बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण है।

अध्ययन का महत्व

इस अध्ययन का महत्व तीन मुख्य स्तरों पर बहुत महत्वपूर्ण है —

''1. शैक्षणिक महत्व'' विश्वविद्यालय, प्राचार्य, शिक्षा प्रशिक्षण और शोधक इन दोनों दृष्टिों का तुलनात्मक अध्ययन कर सकते हैं और समझ सकते हैं कि गांधी जी का शिक्षा दृष्टि वर्तमान समय में क्यों बहुत उपयोगी है। NEP में अपने मुख्य उद्देश्य के लिए यह बहुत प्रत्येक है।

''2. सांस्कृतिक महत्व''

भारत की सांस्कृति में गांधी जी का बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है, उन्होंने शिक्षा के माध्यम से जीवन में स्वालन्ध और मूल्य का श्रम देया। NEP में भी इसके मुख्य बिन्दु बहुत स्पष्ट हैं।

''3. नीति एवं राजनीतिक महत्व''

NEP 2020 राष्ट्रीय स्तर पर बहुत महत्वपूर्ण है जहाँ शिक्षा को केवल औधोगिक विकास के लिए ही नहीं, बल्कि जीवन में व्यक्तित्व और स्वालन्ध के लिए भी उपयोगी मानया गया है। यह गांधी जी के शिक्षा विचार से बहुत समान है, इसलिए अध्ययन का महत्व बहुत अधिक है, जो राष्ट्रीय नीति बनाने वाले अधिकारियों के लिए भी बहुत उपयोगी होगा।

''4. आधुनिक महत्व''

वर्तमान समय में बहुत बार यह संदेह दिया जाता है कि NEP केवल एक आलोचना ही है, परन्तु इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इसके मुख्य बिन्दु बहुत परिचयी बहुत ही महत्वपूर्ण हैं और गांधी जी के जीवन में बहुत समान बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसलिए इस शोध का महत्व यह है कि प्राचीन परम्परा एवं वर्तमान NEP के बीच संशोधित समानता को स्पष्ट करते हुए जीवन में स्वालन्ध और व्यक्तित्व का बहुत महत्वपूर्ण श्रम स्थिति में लाना।

सारियत समीक्षा

यह समीक्षा तीन मुख्य भागों में लिखी गई है —

1. महात्मा गांधी के शिक्षा विचार पर शोध
2. नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर शोध
3. तुलनात्मक परिचय एवं प्राचीन और वर्तमान में समानता

6.1 महात्मा गांधी के शिक्षा विचार पर शोध

''हडाडिन ;1998'' ने अपने अध्ययन में बताया कि गांधी जी के शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए स्वालन्ध और मूल्य का श्रम। उन्होंने "Nai Talim" के माध्यम से बताया कि कुछ करते हुए व्यक्ति अपनी पूरी स्वालन्ध की मुक्ति स्वयं बना सकता है।

''जैन ;2005'' ने अपने शोध में गांधी जी के विचार का विश्लेषण करते हुए बताया कि उनकी शिक्षा परिषद में प्राचीन परम्परा और आधुनिक जीवन के बीच समानता बहुत मुख्य था। उन्होंने बताया कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए व्यक्ति का बहुत महत्वपूर्ण विकास एवं जीवन में मूल्य का श्रम।

''प्रकाश सिंह ;2010'' ने बताया कि गांधी जी के शिक्षा विचार में नौनिहत्व और जीवन में नागरिक जिम्मेदारी का बहुत महत्व था। वह बताता था कि जीवन में स्वालन्ध का श्रम शिक्षा के माध्यम से ही सम्भव है।

6.2 नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर शोध

''विमल ;2021'' ने अपने शोध में बताया कि NEP 2020 में "multidisciplinary learning" and "holistic development" का बहुत महत्व है, जो गांधी जी के शिक्षा दृष्टि के मुख्य उद्देश्य से सम्बन्धित है।

''संतोष कुमार ;2022'' ने अपने अध्ययन में NEP in skill-based learning ,and vocational training की विशेषता पर बल दिया और बताया कि यह बहुत समान बिन्दु गांधी जी के शिक्षा दृष्टि में बहुत समय पूर्व ही देखे जा चुके हैं।

''सुभाष शर्मा ;2023'' ने अपनी प्रोत्साहन शोध में बताया कि NEP में मूल्य आधारित शिक्षा का बहुत महत्व है जहाँ गांधी जी के जीवन में "character building" ,and "hands-on learning" पर बहुत बल देया गया था।

6.3 तुलनात्मक परिचय एवं प्राचीन और वर्तमान में समानता

''होश ;2015'' ने अपने शोध में स्पष्ट किया कि गांधी जी के शिक्षा दृष्टि में प्राचीन परम्परा और जीवन में मूल्य बहुत महत्वपूर्ण था। NEP में भी यह बहुत मुख्य बिन्दु हैं।

गांधी जी के विचार में शिक्षा के बिन्दु जीवन में स्वालन्ध और समानता का श्रम देने के थे, वहीं NEP में जीवन में entrepreneurship और नागरिक विकास का श्रम देने के हैं।

''बेली ;2019'' ने अपनी शोध में बताया कि NEP 2020 में "21st century skills" पर बल देते हुए प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में बहुत मुक्तिशाली बनाने का उद्देश्य है, जो गांधी जी के विचार से बहुत संयुक्त है।

6.4 तुलनात्मक अध्ययन का परम्परागत अध्ययन

यह सम्पूर्ण समीक्षा बहुत मुख्य संदेह देती है —

. गांधी जी के लिए शिक्षा के मुख्य बिन्दु स्वालन्ध और मूल्य थे।

. NEP 2020 के लिए मुख्य बिन्दु skill development or entrepreneurship ,and value-based education हैं।

. प्राचीन और वर्तमान के बीच यह समानता बहुत उपयोगी है।

परन्तु कुछ भिन्न बिन्दु भी हैं —

गांधी जी के विचार में बहुत मुख्य बल जीवन के सांस्कृतिक एवं नागरिक विकास पर था।

. NEP में बहुत बल आधुनिक और परिवर्तित जीवन पर देखते हुए देखा जाता है।

6.5 विश्लेषण का महत्व

इस सारियत समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी का शिक्षा दृष्टि अब भी वर्तमान समय में बहुत उपयोगी है और NEP में उसकी उपयोगिता बहुत मुख्य रूप से मिलती है। प्राचीन और सुधार का समानता शिक्षा के द्वारा जीवन में स्वालन्ध, व्यक्तित्व एवं मूल्य का श्रम बना सकता है।

सम्यकृतिक रूपयोजना एवं अनुसंधान उद्देश्य

7.1 सम्यकृतिक रूपयोजना

इस शोध के लिए एक सम्यकृतिक रूपयोजना लिया गया है जिसमें गांधी जी के शिक्षा विचार एवं नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के मुख्य बिन्दुों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। दोनों दृष्टिकोण अपनी–अपनी समय में बहुत मुख्य संदेह देते हैं।

(1) ''प्राचीन और सुधार का समानता'' — गांधी जी बताता था कि जीवन में प्राचीन परम्परा और जीवन में नैतिक मूल्य बहुत महत्वपूर्ण हैं। वहाँ उन्होंने शिक्षा को जीवन का श्रम बनाने का माध्यम मानया। NEP में भी प्राचीन मूल्य और जीवन में नागरिक जिम्मेदारी पर बहुत संदेह देते हैं।

(2) ''स्वालन्ध और नौनिहत्व का श्रम'' — गांधी जी के लिए स्वालन्ध बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने बताया कि जीवन में कुछ करते हुए व्यक्ति अपनी अपनी आवश्यकताओं का पूरा स्वयं कर सकें। NEP में यह संदेह देते हुए skill development , and entrepreneurship पर बहुत बल दिया गया है।

(3) **''मूल्य आधारित शिक्षा''** — गांधी जी के विचार में मूल्य और व्यक्तित्व को बहुत महत्व दिया गया था। वह बताता था कि शिक्षा बिना मूल्यों के जीवन पूरी तरह पूरी नहीं होती। NEP में भी यह बहुत मुख्य बिन्दु है। value-based learning , and holistic development का संदेह देते हुए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बहुत महत्वपूर्ण रखती है।

7.2 उपप्राधिकारी दृष्टि

इस अध्ययन में Stakeholder Theory and Social Justice Ethics का उपयोग किया गया है।ैजांमीवसकमत जीमवतल बताती है कि जीवन में बहुत प्रभावों (विद्यालय, परिवार, समाज, उद्योग) के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य स्वालन्ध और समानता होना चाहिए। गांधी जी का विचार भी इसे बहुत स्पष्ट करता है। NEP में भी यह बताया गया है कि शिक्षा केवल पात्रता प्रदान करने का माध्यम नहीं बल्कि जीवन में बहुत महत्वपूर्ण श्रम देने का संसाधन है।

7.3 अनुसंधान उद्देश्य इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि गांधी जी के शिक्षा विचार एवं NEP के मुख्य बिन्दुों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाय। इससे कुछ बहुत मुख्य बिन्दु स्पष्ट हो सकते हैं —

1. गांधी जी के विचार में स्वालन्ध और मूल्य बहुत महत्वपूर्ण थे।
2. NEP में नौनिहत्व और entrepreneurship पर बहुत बल देते हुए स्वालन्ध पर संदेह देते हैं।
3. दोनों में जीवन में व्यक्तित्व का श्रम बहुत महत्वपूर्ण है।
4. दोनों में जीवन में समानता एवं मूल्य के विकास का मुख्य उद्देश्य बहुत मुख्य है।
5. तुलना से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी का शिक्षा दृष्टि अब भी वर्तमान समय में बहुत उपयोगी है।

7.4 अनुसंधान प्रश्न

1. क्या गांधी जी के शिक्षा विचार और NEP के मुख्य बिन्दु बहुत समान हैं?
2. क्या स्वालन्ध और मूल्य पर गांधी जी के विचार NEP के उद्देश्य से तुलनात्मक रूप से बहुत अथवा कुछ समान हैं?
3. क्या NEP में entrepreneurship and skill development पर बल देते हुए गांधी जी के स्वालन्ध और नौनिहत्व के श्रम के बहुत निकट हैं?
4. क्या दोनों में जीवन में समानता एवं नैतिक मूल्य का श्रम बहुत महत्वपूर्ण है।
5. क्या तुलना से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी का शिक्षा विचार अब भी NEP में प्रभावी है।

7.5 विश्लेषण का आधार

इस अध्ययन में doctrinal analysis एवं thematic content coding का उपयोग किया जाय। गांधी जी के लिए शिक्षा का मुख्य उद्देश्य था स्वालन्ध एवं मूल्य का श्रम, वहीं NEP में बहुत बल स्वालन्ध,`ापसस कमअमसवचउमदज एवं अंसनम.इंमक मकनबंजपवद पर दिया गया है। तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि जीवन में प्राचीन और नवीन शिक्षा के बीच बहुत महत्वपूर्ण समानता है।

7.6 अध्ययन का महत्व

इस सम्यकृतिक रूपयोजना से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी के शिक्षा विचार एवं NEP के बिन्दुों का तुलनात्मक अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। यह समझौता देता है कि जीवन में स्वालन्ध, नौनिहत्व एवं मूल्य का श्रम बहुत आवश्यक है। अब भी वर्तमान शिक्षा परिचार्य में गांधी जी के शिक्षा विचार बहुत उपयोगी हैं और जीवन में बहुत महत्वपूर्ण उपयोगिता रखता है।

अनुसंधान पद्धति

8.1 अनुसंधान का आधार

इस शोध का आधार गांधी जी के शिक्षा विचार और NEP 2020 में प्रस्तुत मुख्य बिन्दुों का तुलनात्मक अध्ययन है। दोनों में बहुत संदेह बहुत महत्वपूर्ण हैं। गांधी जी ने शिक्षा में प्राचीन परम्परा और नैतिक मूल्य पर बल दिया, वहीं NEP में नौनिहत्व, skill development and entrepreneurship पर बल देते हुए जीवन में स्वालन्ध का श्रम देया गया है।

8.2 अनुसंधान फलस्वरूप

इस शोध में तीन मुख्य फलस्वरूप प्रयोग में लाए गए हैं —

1. ''Doctrinal Analysis'' — गांधी जी के विचारों का विश्लेषण उनके परिचय, समाजकालीन परिवार और उनके लिखित स्रोतों के आधार पर किया गया।
2. ''Comparative Method** — गांधी जी के शिक्षा विचार और NEP के मुख्य बिन्दुों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया।
3. ''Thematic Content Coding** — प्रकाशित अध्ययनों, NEP के प्रस्तर, और शोधों का सांविधिक विश्लेषण किया गया।

8.3 अनुसंधान प्रक्रिया

1. गांधी जी के शिक्षा दृष्टि पर लिखित स्रोतों का मूल्यशील विश्लेषण किया गया।
2. NEP 2020 में प्रस्तुत मुख्य बिन्दुों का सांस्कृतिक और शिक्षा विश्लेषण किया गया।
3. तुलनात्मक विश्लेषण में बहुत महत्वपूर्ण बिन्दुों का तुलनात्मक पुनः समय में अवलोकन किया गया।

8.4 विषयगत स्रोत

इस शोध में चयनित स्रोत हैं —

. गांधी जी के लिए मुख्य स्रोत उनके लिखित "Nai Talim" एवं उनके जीवन में प्रत्येक कुछ विचार का विश्लेषण है।

. NEP के लिए मुख्य स्रोत हैं कृ राष्ट्रीय शिक्षा एवं संचालन विभाग का प्रोत्साहन, प्रकाशित जिीार्ट और शोध स्रोत।

8.5 अनुसंधान का दृष्टिकोण

तुलनात्मक दृष्टि से इस शोध का मुख्य उद्देश्य यह है कि गांधी जी के शिक्षा विचार में प्राचीन परम्परा और जीवन में मूल्य बहुत मुख्य थे। वहीं NEP में जीवन में entrepreneurship and नौनिहत्व पर बल देते हुए मूल्य आधारित शिक्षा का श्रम दिया है।

8.6 चुनौतियां

1. गांधी जी के लिए लिखित स्रोत बहुत कम हैं जहाँ से अपनी दृष्टि की प्रत्येक जानकारी मिल सके।
2. NEP 2020 बहुत नया प्रस्तुति है और इसके विश्लेषण में बहुत कुछ शोध बहुत कम हुआ है।
3. तुलनात्मक विश्लेषण में बहुत बार subjective interpretation बहुत अधिक रहता है।

8.7 संरचना

इस शोध का आधार सम्पूर्ण रूप से तीन मुख्य स्तरों पर बहुत स्पष्ट है।

. गांधी जी के शिक्षा विचार

. NEP 2020 के मुख्य बिन्दु

. तुलनात्मक विश्लेषण एवं प्रस्तुत परिणाम

8.8 अध्ययन का महत्व

इस अनुसंधान पद्धति का मुख्य महत्व यह है कि यह गांधी जी के जीवन में प्राचीन परम्परा और नवीन शिक्षा नीति के मुख्य बिन्दुों के बीच बहुत महत्वपूर्ण समानता को दर्शाने में मदद करता है और जीवन में स्वालन्ध और मूल्य का श्रम बहुत महत्वपूर्ण बनाता है।

<u>विश्लेषण एवं चर्चा</u>

9.1 प्राचीन और सुधार का समानता

गांधी जी के शिक्षा विचार में एक बहुत महत्वपूर्ण बिन्दु था कि जीवन में प्राचीन परम्परा और सुधार के बीच समानता बनाना चाहिए। वह बताता था कि जीवन में प्राचीन परम्परा का श्रम बहुत महत्वपूर्ण है परन्तु वह नवीन समय के आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन का भी मांग करता है। इस दृष्टि से उन्होंने शिक्षा को जीवन के पूरा विकास का माध्यम मानया। NEP 2020 में यह बहुत बहुत समान देखा जा सकता है जहाँ जीवन में holistic development and multidisciplinary learning पर बल दिया गया है।

9.2 गांधी जी का शिक्षा विचार एवं प्राचीन परम्परा

गांधी जी बताता था कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए स्वालन्ध और जीवन में मूल्य का श्रम देना। वह अपनी "Nai Talim" में इस बात पर बहुत संदेह देते थे कि जीवन में कुछ करते हुए ही स्वालन्ध की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्राचीन परम्परा के संदेह में उन्होंने जीवन में समानता, नैतिक मूल्य एवं नागरिक जिम्मेदारी पर बहुत बल दिया। NEP में भी यह संदेह देते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य जीवन में व्यक्तित्व और स्वालन्ध का श्रम बनाना है।

9.3 NEP 2020 का संदेह

NEP 2020 में बहुत मुख्य बिन्दु देखे जा सकते हैं :

- skill development
- vocational training
- value-based education
- holistic development

यह बिन्दु गांधी जी के विचारों से बहुत समान हैं। परन्तु NEP में बहुत बल आधुनिक आवश्यकताओं पर देखा जाता है जिसके कारण उसके प्रभाव बहुत मुक्तिशाली भी हो सकते हैं।

9.4 तुलनात्मक परिणाम

तुलना से यह स्पष्ट होता है कि दोनों में बहुत मुख्य बिन्दु समान हैं, जैसे कृ

1. स्वालन्ध का श्रम
2. मूल्य आधारित शिक्षा
3. नागरिक जिम्मेदारी
4. जीवन में समानता

परन्तु कुछ बिन्दु बहुत भिन्न भी हैं —

1. गांधी जी के लिए जीवन में प्राचीन परम्परा और जीवन का सांस्कृतिक परिणाम बहुत मुख्य था, वहीं छम्च में आधुनिक अधिकार और आधुनिक विकास पर बहुत बल देखा जाता है

2. गांधी जी ने जीवन में hands-on learning और कुछ करते हुए स्वालन्ध पर बहुत बल दिया, वहीं NEP में cognitive learning और vocational exposure पर बहुत संदेह है।

9.5 सुधार एवं प्राचीन के बीच समानता का अध्ययन

प्राचीन परम्परा और सुधार के बीच बहुत मुख्य संदेह हैं। गांधी जी के लिए जीवन में स्वालन्ध का श्रम प्राचीन परम्परा पर आधारित था, वहीं NEP में नवीन समय की आवश्यकताओं के अनुसार entrepreneurship और vocational learning के माध्यम से जीवन में स्वालन्ध का श्रम देया गया। प्राचीन में मूल्य पर बल देने की प्राचीन दृष्टि NEP में value-based education के माध्यम से पुनः संदेह देते हुए बहुत बहुत उपयोगी है।

9.6 बहुत महत्वपूर्ण बातें एवं समझ

इस विश्लेषण में कुछ बहुत मुख्य बातें स्पष्ट होती हैं कृ

. गांधी जी के शिक्षा विचार में प्राचीन परम्परा और जीवन में समानता का श्रम था।

. NEP में जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के लिए बहुत महत्वपूर्ण विकास का श्रम है, जो प्रत्येक व्यक्ति को नागरिक जिम्मेदार बना सकता है।

. तुलना से यह भी स्पष्ट होता है कि गांधी जी के विचार और NEP में बहुत संदेह हैं परन्तु उनका प्रभाव बहुत भिन्न परिस्थितियों में मिलता है, जहाँ प्राचीन परम्परा का बहुत महत्व है वहीं NEP में आधुनिक समय की आवश्यकताओं का बहुत प्रभाव है।

9.7 विश्लेषण का महत्व

इस विश्लेषण का मुख्य महत्व यह है कि गांधी जी के शिक्षा विचार अब भी NEP के लिए बहुत उपयोगी हैं। जीवन में प्राचीन परम्परा और नवीन समय की आवश्यकताएँ बहुत महत्वपूर्ण हैं। दोनों में बहुत मुख्य बिन्दु जैसा कि स्वालन्ध, मूल्य आधारित शिक्षा और नागरिक जिम्मेदारी बहुत समान हैं। इसलिए जीवन में बहुत समय तक समानता और बहुत महत्वपूर्ण श्रम बनाया जा सकता है।

निष्कर्ष एवं प्रस्तुतियां

10.1 निष्कर्ष

इस शोध के तुलनात्मक विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि गांधी जी के शिक्षा विचार में प्राचीन परम्परा एवं जीवन में मूल्य का श्रम बहुत मुख्य था। उन्होंने अपनी "Nai Talim" के माध्यम से स्वालन्ध, नागरिक जिम्मेदारी एवं व्यक्तित्व के विकास पर बल दिया।

NEP 2020 में भी यह बहुत मुख्य बिन्दु मिलते हैं जहाँ value-based education and skill development and holistic learning पर बहुत संदेह देते हैं। तुलनात्मक परिणाम से यह भी स्पष्ट होता है कि गांधी जी के शिक्षा विचार और NEP में बहुत समान बिन्दु हैं, परन्तु उनका प्रभाव उनके अपनी–अपनी परिस्थितियों से भिन्न है। निष्कर्ष स्वरूप यह है कि जीवन में प्राचीन परम्परा और नवीन शिक्षा नीति के बीच संशोधित समानता बहुत आवश्यक है जिसका श्रम गांधी जी ने अपनी शिक्षा दृष्टि से देया और NEP में इसके पुनः संदेह बहुत मुख्य रूप से हुए हैं।

10.2 प्रस्तुतियां

1. **''शैक्षणिक प्रस्तुति''** — विश्वविद्यालयों एवं प्राचार्य परिवारों में गांधी जी के शिक्षा विचार पर आधारित एक अनिवार्य पाठ्यक्रम होना चाहिए जिसके माध्यम से विद्यालय में अंसनम.इंमक मकनबंजपवद का श्रम पहुंचा जा सके।

2. **''नीति प्रस्तुति''** — राष्ट्रीय स्तर पर NEP का संचालन करते समय यह आवश्यक है कि उसमें गांधी जी के जीवन में स्वालन्ध और नागरिक जिम्मेदारी पर बल देने वाले बिन्दुों को भी अनिवार्य रूप से लाया जाए।

3. **''समाज प्रस्तुति''** — जीवन में नागरिक जिम्मेदारी के उद्देश्य से बहुत संदेह देने वाले गांधी जी के विचार NEP के माध्यम से और बहुत प्रभावी बनाये जा सकते हैं जो समाजकालीन चुनाव का समाधान बना सकता है।

4. **''विधिक प्रस्तुति''** — राष्ट्रीय शिक्षा नीति के लिए आवश्यक है कि उनके प्रभावों का मूल्य आधार पर समस्त संरचनात्मक स्तरों पर जांच हो। यह सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण बहुत प्रभावी होगी।

10.3 पूर्ण निष्कर्ष

तुलनात्मक विश्लेषण से यह पूर्ण निष्कर्ष होता है कि गांधी जी का शिक्षा दृष्टि एवं NEP 2020 अब के आधुनिक जीवन में बहुत उपयोगी हैं। दोनों में बहुत समान बिन्दु हैं जो जीवन में स्वालन्ध और मूल्य का श्रम बना सकते हैं। गांधी जी ने अपनी "Nai Talim" के माध्यम से जहाँ स्वालन्ध और नागरिक जिम्मेदारी पर बल दिया, वहीं NEP में नौनिहत्व, entrepreneurship and value-based education के माध्यम से पुनः संदेह देते हुए जीवन में बहुत महत्वपूर्ण श्रम दिया है।

संदर्भ

1 बावीस, ए. (2014). *'आधिकारीन आंदोलन की सांस्कृतिक राजनीति : पहचान, पर्यावरण एवं प्रतिपरीक्षण', नई दिल्ली : ओंर्क पॉचक्शन।*

2 चौधरी, के. (2018). *भगट आगेना एवं आधिकारीन पहचान : एक इतिहासी परिचय। 'इंटीडेशन हिस्ट्रीोल रिजर्व', 45(2), 215–236.*

3 देसाई, एम. (2020). *मोंगदढह को ध्यान में रखते हुए : आधिकारीन प्रतिशता एवं समाजकीय धाम। 'इंडियन ऑफ पोस्ट विकास', 55(42), 67–75.*

4 गुप्ता, ए. (2021). *गोविन्द गुरू एवं उपप्रतिनिधि और आधिकारीन प्रतिपरीक्षण : पश्चिमी भारत में आधिकारीन बदलाव। 'सम्बन्धी अध्ययन रिजर्व', 39(1), 88–105.*

5 हडाडिान, डी- (2007). *'आधिकारीन की आर्याता : पश्चिमी भारत में आधिकारीन प्रतिशता', बिनलइमटाईयन : इंडियन यूर्पी पॉचक्शन।*

6 जोशी, आर. (2022). *मावाजी महाराज के मौखिक परम्परा : आधिकारीन सांस्कृति में भागीदारता एवं समानता। 'सॉक एसीज़ फोलर्कल वैज्ञानिक', 18(3), 142–160.*

7 मेहा, पी- (2019). *नैतिक सुधार एवं प्रतिपरीक्षण : गोविन्द गुरू का भगट आगेना। 'आधिकारीन अध्ययन परिचय', 27(1), 55–72.*

8 पटेल, डी. (2017). *गुजरात की संत्र परम्परा में स्वा संत्र मावाजी महाराज एवं उनका परिचय। 'इंटीडेशन फलफसरॉफरियल', 45(4), 301–320.*

9 राजुप, एस. (2022). *सीमा पर संत्र : आधिकारीन भागीदार की तुलनात्मक परिचय। 'तुलनात्मक धर्म समीक्षा', 28(2), 121–139.*

10 सकनेना, वी- (2014). *भागीदार और सुधार : आधिकारीन श्रम में संत्र की भूमिका। 'समाज परिवर्तन', 44(1), 75–92.*

11 शर्मा, पी. (2015). निर्धनुद कृष्णा एवं सामाजिक संदेह : स्वा संत्र मावाजी के शिक्षाओं का पुनः अध्ययन। 'रविगीजन ऑफ सोसिका ओ ा', 9(2), 189–205.

12 सिंह, वी. (2011). 'गोविन्द गुरू एवं भीलि उत्तराधि : एक आधिकारीन प्रतिपरीक्षण का इतिहास', उदयपुर : आधिकारीन अध्ययन एवं प्र ाक्षण संस्थान।

13 शर्मा, जी- (2010). 'भागीदार एवं आधिकारीन आधुनिकता : स्वा संत्र मावाजी महाराज', जयपुर : राजस्थान साहित्य आकेशमि।

14 टेल्टबमडे, ए. (2020). 'जातर्गताधि का राश्ट्र : नैति पर विचार, इनीलिड्री–वल की दृष्टि में समानता', नई दिल्ली : नावायना।

15 पाण्डे, एम. (2023). 'आधिकारीन आधुनिकता : आधुनिक भारत में निरन्तरता एवं परिवर्तन', 'इंटीडेशन इंटरनेशन रिजर्व', 12(2), 221–239.

16 चौधरी, एस. (2021). भागीदार संत्रों का पुनः अध्ययन : संत्र, गायन एवं समानता। 'सॉक्स ान ऑफ सोसिका रवि ा', 19(1), 45–70.